प्रातः सभा 5/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। जब ओम शान्ति कहा जाता है उनके अर्थ का दुनियां में कोई को भी पता नहीं है। ओमशान्ति क्यों कहते हैं, किसको याद करते हैं कुछ भी नहीं समझते हैं। तुम समझते हो ओमशान्ति कहने से अपना घर याद पड़ता है। फिर घर में बैठ तो नहीं जाना है। बाप के बच्चे हैं तो जरूर अपना स्वर्ग भी याद पड़ेगा ना। तो ओमशान्ति कहने से भी सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। शान्ति के सागर बाप का बच्चा हूँ। जो बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं वही बाप हमको पवित्र, शान्त स्वरूप बनाते हैं। सारी बात पवित्रता की मुख्य होती है। पवित्र दुनियां और अपवित्र दुनियां है। पवित्र दुनियां में एक भी विकार नहीं। अपवित्र दुनियां में 5 विकार हैं। इसलिये कहा जाता है विकारी दुनियां। वह है निर्विकारी दुनियां। निर्विकारी दुनियां से सीढ़ी उतरते2 फिर नीचे विकारी दुनियां में आते हैं। वह है पावन दुनियां यह है पतित दुनियां। रामराज्य और रावण राज्य है ना। समय पर दिन और रात भी गाये हुये हैं। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात। दिन सुख, रात दुःख। रात भटकने की होती है। यूं रात में कोई भटकना नहीं होता है; परन्तु भक्ति को भटकना कहा जाता है। भटकते2 दुर्गति को पाते हैं। तुम बच्चे अभी आये हो सद्गति पाने लिये। तुम्हारी आत्मा में सभी पाप थे। 5 विकार थे। उनमें भी मुख्य है काम विकार। जिससे ही मनुष्य पापात्मा बनते हैं। यह तो हरेक जानते हैं हम पतित हैं, भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं और पापात्मा भी हैं। एक काम विकार कारण भी क्वालीफीकेशन बिगड़ पड़ती है। इसलिये बाप कहते हैं काम को जीतो तो जगत जीत अर्थात् नई दुनियां विश्व के मालिक बनेंगे। तो अन्दर में इतनी खुशी रहनी चाहिए। मनुष्य पतित बनते हैं तो कुछ भी समझते ही नहीं। इसलिये कहा जाता है पशुओं जानवरों मिसल बन जाते हैं। जो नाम कहा। बाप समझाते हैं कोई भी विकार न होना चाहिए। मुख्य है काम विकार। इस पर कितने हंगामे आदि होते हैं घर घर में। कितनी अशान्ति हाहाकार हो जाती है। इस समय दुनियां में हाहाकार क्यों हैं, क्योंकि पापात्माएं हैं। विकारों के कारण ही असुर कहा जाता है। विकारी जानवरों से भी बदतर हो जाते हैं। जानवरों को तो कब निर्विकारी वा पावन बनने नहीं सीखावेंगे ना। मनुष्यों को ही समझाया जाता है। बाप आकर समझाते हैं; क्योंकि इस समय सभी जानवर मिसल हैं। क्योंकि पतित है। रावण राज्य है। आगे तो राम राज्य–रावण राज्य का अर्थ नहीं समझते थे। जैसे कहते हैं ऐ उल्लू पट्ठा। तो ऐसी ही अवस्था रहती थी। अभी ज्ञान में आने से तुम समझते हो हम तो बिल्कुल कौड़ी मिसल वर्थ नॉट ए पैनी थे। काम की जो चीज नहीं होती है उनको आग में जलाई जाती है। अभी तुम जानते हो दुनियां में कोई भी का(म) की चीज़ नहीं। सभी मनुष्य मात्र को आग लगनी है। भंभोर को आग लगनी है। जो कुछ इन आँखों से देखा जाता है। सभी को आग लग जावेगी। आत्मा को तो आग लगती ही नहीं। आत्मा तो सदैव जैसे इनश्योर है। सदैव जीती रहती है। आत्मा को कब इनश्योर कराते हैं क्या। शरीर को कराया जाता है। आत्मा तो अविनाशी है। बच्चों को समझाया गया है यह खेल है। आत्मा तो ऊपर में रहने वाली 5 तत्वों से भी ऊपर है। 5 तत्वों से ही सारी दुनियां की सामग्री (बनती) है। आत्मा तो नहीं बनती है। आत्मा सदैव है ही। सिर्फ़ पुण्यात्मा, पापात्मा बनते हैं। आत्मा पर ही नाम पड़ता है पुण्यात्मा। पापात्मा। 5 विकारों से कितने गंदे बन जाते हैं। अभी बाप आये हैं पापों (से) (झु)ड़ाने। विकार ही सारा कैरेक्टर्स बिगाड़ती है। कैरेक्टर्स किसको कहा जाता है इसको भी समझते नहीं। इसको क(हा) (ही) जाता है असुरों, जानवरों, बन्दरों की दुनियां गाया भी हुआ है पाण्डव राज्य और कौरव राज्य। अभी पाण्डव कौन है यह भी नहीं जानते। तुम समझते हो वह है कौरव गवर्मेन्ट। यह है पाण्डव गवर्मेन्ट। यह है ऊंच ते ऊंच गवर्मेन्ट। पाण्डव गवर्मेन्ट न कह ईश्वरीय गवर्मेन्ट कह सकते हो। तुम समझते हो हम ईश्वरीय गवर्मेन्ट हैं। बाप आये हैं राज्य स्थापन करने। यह है गुप्त गवर्मेन्ट। कितनी भारी ते भारी गवर्मेन्ट है। इस समय ईश्वरीय गवर्मेन्ट कहेंगे। ईश्वरीय गवर्मेन्ट क्या करती है आत्माओं को पवित्र बनाकर देवता बनाती है। नहीं तो देवता कहाँ (से) आये। यह कोई भी नहीं जानते। है तो यह भी मनुष्य; परन्तु देवता कैसे बने? किसने बनाया? देवी देवताएं होते ही हैं स्वर्ग में। तो उन्हों को स्वर्गवासी किसने बनाया? स्वर्गवासी फिर नर्कवासी बनते हैं। फिर नर्कवासी से

स्वर्गवासी बनते हैं। यह तुम भी नहीं जानते थे और फिर कैसे जानेंगे। स्वर्ग सतयुग को, नर्क कलियुग को कहा जाता है। यह भी तुम समझते हो कि यह ड्रामा बना हुआ है। इतने सभी मनुष्य एक्टर्स हैं। यह भी बातें बुद्धि में होनी चाहिए। पढ़ाई तो बुद्धि में होनी चाहिए ना और पवित्र तो जरूर बनना है। पतित बनना बहुत खराब बात है। आत्मा ही पतित बनती है। एक/दो में पतित बनते हैं। पतितों को पावन बनाना यह तुम्हारा धंधा है। पावन बनो तो पावन दुनियां में चलेंगे। यह आत्मा समझती है। आत्मा न हो तो शरीर ठहर भी न सके। रेस्पॉन्ड (f)मिल न सके। आत्मा समझती है हम असल पावन दुनियां के रहवासी हैं। अभी बाप ने समझाया है तुम बिल्कुल ही बेसमझ थे इसलिये पतित दुनियां के लायक बन पड़े हो। अभी जब तक पावन बनेंगे तब तक स्वर्ग के लायक न बन सकेंगे। सतयुग में भी पद में कितना फर्क है। कहां राजा कहां रंक वहां भी भल स्वर्ग है; परन्तु राजा और रंक तो होंगे ना। यहां है नर्क के विकारी राजा और रंक। वहां होंगे निर्विकारी। स्वर्ग में होंगे तो तुमको (न)र्क थोड़े ही याद पड़ेगा। बिल्कुल ख्याल में भी नहीं आवेगा। नर्क और स्वर्ग की भेंट भी संगम पर की जाती है। वहां थोड़े ही भेंट कर सकेंगे। इस संगम युग पर ही तुमको सारा ज्ञान मिलता है। पवित्र बनने का हथियार ....लता है। एक को ही कहा जाता है हे पतित–पावन बाबा। हमको ऐसा पावन बनाओ। यह स्वर्ग के मालिक हैं। तुम जानते हो हम ही स्वर्गवासी थे, फिर 84 जन्म ले पतित बने हैं। श्याम और सुन्दर। इनका नाम भी ऐसा है। कृष्ण का चित्र भी श्याम सुन्दर बना देते हैं; परन्तु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। कृष्ण की भी तुमको कितनी ...पर समझानी मिलती है। इनमें दो दुनियाएँ कर दी हैं। वास्तव में दो दुनियाएं तो हैं नहीं। दुनियां एक ही .... नई और पुरानी होती है। पहले छोटे बच्चे नये होते हैं फिर बड़े बन बूढ़े होते हैं। दुनियां भी नई सो (पुरान)ी होती है। तुम कितना माथा मारते हो समझाने लिये। अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो ना। इन्होंने ..... है ना। समझ से कितने मीठे बने हैं। किसने समझाया? भगवान ने। लड़ाई आदि की तो बात ही नहीं। ..... कितना समझदार नॉलेजफुल बनाते हैं। कितना पवित्र हैं। शिव के चित्र के आगे मनुष्य जाकर नमन करते; परन्तु वह कौन हैं, क्या करते हैं यह कोई भी नहीं जानते। शिवकाशी विश्व नाथ गंगा। बस सिर्फ़ कहते रहते (अर्थ) जरा भी नहीं समझते हैं। समझाओ तो कहेंगे तुम क्या हमको समझावेंगे। हम तो वेद–शास्त्र आदि सभी .... हुये हैं। बहुत पढ़े हैं अर्थात् बेसमझ बने हैं। भक्ति से दुर्गति को पाया है। रामराज्य किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानते हैं। रावण राज्य है ही असुरों का राज्य। रामराज्य है देवताओं का राज्य। तुम यहां बैठे ..... बुद्धि में है रामराज्य था। अभी रावण राज्य है। रामराज्य को सतयुग नई दुनियां कहा जाता है। तुम्हारे में भी ....र हैं जिनको धारणा होती है। कई तो भूल जाते हैं; क्योंकि बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि बन गये हैं। तो अभी ..... बुद्धि जो बने हैं उनका काम है औरों को पारस बुद्धि बनाना। पत्थर बुद्धि की एक्टविटी ही वह चलती .... क्योंकि हंस और बगुले हुये ना। हंस कब किसको दुःख नहीं देते हैं। बगुले दुःख देते हैं। बगुल.... मांसाहारी ..... होती हैं। उन्हों की चाल ही बगुला मिसल होती है। उनमें सभी विकार होते हैं। सिर्फ़ काम विकार नहीं .... सभी विकार हैं। यहां भी ऐसे बहुत विकारी आ जाते हैं जिनको असुर कहा जाता है। पहचान नहीं रहती। सेन्टर्स पर विकारी आते हैं। बहाना बनाते हैं हम ब्राह्मण बाबा के हैं; परन्तु है झूठ। इनको कहा ही जाता है ...निया। अभी है संगम। कितना फर्क रहता है। जो झूठ बोलते हैं, झूठा काम करते हैं वही थर्ड ग्रेड बनते हैं। (से)कण्ड, थर्ड ग्रेड तो होते हैं ना। बाप बता सकते हैं यह थर्ड ग्रेड बगुला है। बाप समझाते हैं पवित्रता का (पू)रा सबूत देना है। कई कहते हैं यह दोनों इकट्ठे रहते पवित्र रहे यह तो असम्भव है। तो बच्चों को समझाना (चाहिए)। योगबल न होने कारण इतनी सहज बात भी पूरी रीत समझा नहीं सकते हैं। उनको यह बात कोई ..... समझाते कि यहां हमको भगवान पढ़ाते हैं। वह कहते हैं पवित्र बनने से तुम 21 जन्म स्वर्ग के मालिक बनेंगे। .... पवित्र दुनियां। पवित्र दुनिया में पतित कोई हो न सके। 5 विकार ही नहीं हैं। वह है वायसलेस वर्ल्ड। ..... विषियस वर्ल्ड। हमको सतयुग की बादशाही मिलती है तो हम एक जन्म पावन क्यों नहीं बनेंगे। जबरदस्त मिलती है। हमको और ही खुशी होती है गन्धर्व विवाह कर हम पवित्र रह दिखावेंगे। देवी देवताएं पवित्र

है ना। अपवित्र से पवित्र भी बाप ही बनावेंगे। गीता में कौरव और पाण्डवों की जीत दिखाई है। वह तो झूठ तो बताना चाहिए हमको यह टेम्टेशन है। बाप ही ऐसा बनाते हैं। बाप बिगर तो कोई दुनियां बना न सके। मनुष्य को देवता बनाने बाप ही आते हैं। कृष्ण को थोड़े ही आना होता है मनुष्य से देवता बनाने। भगवान शिव आते हैं। जिसकी रात्रि गाई जाती है। यह भी समझाया है ज्ञान भक्ति वैराग्य। ज्ञान और भक्ति आधा2 है। भक्ति के बाद वैराग्य। भक्ति की दुनियां को आसुरी छी छी दुनियां कहा जाता है। फिर उनका वैराग्य होता है। अभी घर जाना है। यह कपड़े उतार देनी है। इस छी छी दुनियां में नहीं रहना है। 84 का चक्र अभी पूरा हुआ। अभी वाया शान्तिधाम जाना है। पहले2 अलफ की बात नहीं भूलनी है। यह भी बच्चे समझते हैं यह पुरानी दुनियां खत्म होती है। बाप नई दैवी दुनियां स्थापन करते हैं। बाप अनेक बार आते हैं स्वर्ग की स्थापना करने। नर्क का विनाश हो जाता है। नर्क कितना बड़ा है। स्वर्ग कितना छोटा है। नई दुनियां में एक ही धर्म होता है। यहां हैं अनेक धर्म। लिखा हुआ भी है शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश। ब्रह्मा द्वारा एक धर्म सीापना। तो यह धर्म किसने स्थापन किया? ब्रह्मा ने तो नहीं किया। ब्रह्मा ही पतित सो फिर पावन बनता है। मेरे लिये तो नहीं कहेंगे पतित सो पावन। पावन हैं तो ल0ना0 नाम है। पतित हैं तो ब्रह्मा नाम है। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। यह प्रजापिता है ना। उनको (शिवबाबा) अनादि क्रियटर कहा जाता है। आत्माएं तो हैं ही। आत्माओं को क्रियेट नहीं करते हैं। इसलिये अनादि कहा जाता है। अनादि अक्षर बाप के लिये है। बाप अनादि .... आत्माएं भी अनादि हैं। खेल भी अनादि है। यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। स्व आत्मा को सृष्टि–चक्र के आदि, मध्य, अन्त ड्युरेशन का ज्ञान मिलता है। यह किसने दिया? बाप ने। तुम 21 जन्मों लिये धनी के बन जाते हो। फिर रावण के राज्य में निर्धणके बन जाते हो। यहां से ही कैरेक्टर्स बिगड़ते हैं। विकार है ना। बाकी दो दुनियाएँ नहीं हैं। मनुष्य तो फिर समझते हैं नर्क स्वर्ग सभी इकट्ठे ही चलते रहते हैं। अभी तुम बच्चों को कितना क्लीयर समझाया जाता है। अभी तुम गुप्त हो। शास्त्रों में तो क्या2 लिख दिया है। कितना सूत मुँझा हुआ है। सिवाय बाप के कोई समझा न सके। उनको ही पुकारते हैं। हम कोई काम के न रहे हैं आकर पावन बन हमारे कैरेक्टर्स सुधारो। तुम्हारी कितनी कैरेक्टर्स सुधरती हैं। कोई2 के सुधरने बदली और ही बिगड़ती है। चलन से ही मालूम पड़ जाता है। आज महारथी हंस कहलाते हैं, कल बगुला बन पड़ते हैं। देरी नहीं लगती है। माया भी गुप्त है ना। क्रोध कुछ देखने में थोड़े ही आता। भूं–2 करते हैं फिर वह बाहर निकलने से दिखाई पड़ता है। फिर आश्चर्यवत .... भागन्ती हो जाते हैं। कितना गिरते हैं। एकदम पत्थर बन जाते हैं। इन्द्रप्रस्थ की भी बात है ना। मालूम तो पड़ ही जाता है। ऐसे फिर सभा में नहीं आना चाहिए। थोड़ा बहुत सुना है तो स्वर्ग में जाते हैं। ज्ञान का विनाश नहीं होता। अभी बाप कहते हैं तुमको पुरूषार्थ कर ऊंच पद पाना है। अगर विकार में गये तो पद भ्रष्ट कर देंगे। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बनेंगे फिर वैश्यवंशी, शूद्रवंशी बनेंगे। अभी तुम समझते हो यह चक्र कैसे फिरता है। वह तो कलियुग की आयु ही 40 हजार वर्ष कह देते हैं। सीढ़ी तो नीचे उतरनी ही है ना। 40 हजार वर्ष में मनुष्य कितने ढेर हो जाये। 5000 वर्ष में ही इतने मनुष्य हैं जो खाने लिये ही नहीं मिलता। तो इतने हजार वर्ष में कितने वृद्धि हो जाये। यह तो हो ही नहीं सकता। तो बाप आकर आथत देते है, धैर्य देते हैं। उस गवर्मेन्ट को तो लड़ना ही है। उन्हों की बुद्धि इस तरफ आ न सके। अभी तुम्हारी बुद्धि देखो कितनी पलटती है। फिर भी माया धोखा जरूर देती है। इच्छा मात्रम् अविद्या। कोई इच्छा की कि गया। वर्थ नॉट ए पेनी बन जाते हैं। अच्छे2 महारथियों को माया कोई न कोई प्रकार से धोखा देती है। फिर वह दिल पर चढ़ नहीं सकते। जैसे लौकिक बाप के दिल पर नहीं चढ़ते हैं। कोई तो बच्चे ऐसे होते हैं जो बाप को ... खत्म कर देते हैं। परिवार को खत्म कर देते हैं। महान पापात्माएं हैं। रावण क्या कर देती है बहुत नफरत आती ....। बहुत डर्टी दुनियां है। इससे कब दिल नहीं लगानी चाहिए। पवित्र बनने की बड़ी हिम्मत है। विश्व की ..... की प्राइज़ लेने लिये पवित्रता मुख्य है। इसलिये बाप को कहते हैं कि आकर पावन बनाओ। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।